International Journal of Humanities Social Science and Management (IJHSSM)
Volume 5, Issue 1, Jan.-Feb., 2025, pp: 747-751 ISSN: 3048-6874
www.ijhssm.org

वर्तमान शिक्षा में जिद्दू कृष्णामूर्ति के शैक्षिक विचारों की प्रासंगिकता एक अध्ययन

रजनी मित्तल
शोधार्थिनी छात्रा
राजकीय डिग्री कॉलिज
माँट मथुरा

डॉ0 सत्येन्द्र सिंह
एसोसिएट प्रोफेसर
राजकीय डिग्री कॉलिज,
माँट मथुरा

Date of Submission: 12-01-2025 Date of Acceptance: 24-01-2025

सारांश–

इस शोध पत्र का उद्देश्य प्रख्यात भारतीय दार्शनिक जिद्दू कृष्णामूर्ति के दर्शन और शैक्षिक विचारों पर नजर डालता है। वे जागरूकता को मुक्त मन के लिए आवश्यक मानते थे। उनका मानना था कि शिक्षा का प्रारम्भ और अंत जीवन और खुद को समझने में मदद करता है। शिक्षा अच्छाई का पोषण है और अच्छाई भय की छाया में नही खिल सकती। इस शोधकत्री ने दार्शनिक पद्धति का प्रयोग किया और डेटा संग्रह के लिए प्राथनिक और द्वितीयक स्त्रोतों का प्रयोग किया। पूर्णतया अध्ययन में बच्चे के समग्र विकास के लिए कृष्णामूर्ति के भय मुक्त दृष्टिकोण को दर्शाया गया है। जे0कृष्णामूर्ति ने कहा है–

''शिक्षा को तकनीक मुक्त, प्राकृतिक शिक्षा प्रदान की जानी चाहिए। जो बाल केन्द्रित दृष्टिकोण का पालन करती है। उनका मानना था कि शिक्षण केवल जानकारी देना नही है। बल्कि जिज्ञासु मन का विकास करना है।''

मुख्य शब्दः स्वतन्त्र मन, विचार सही शिक्षा, शिक्षक, विद्यार्थी।

परिचय

बीसवीं सदी के एक प्रख्यात और बौद्विक विचारक जिद्दू कृष्णामूर्ति भारतीय दार्शनिक है। वे उन समकालीन भारतीय दार्शनिकों में से एक थे जिन्होंनें शिक्षा की पारम्परिक प्रणाली के खिलाफ खडे होकर अद्वितीय दार्शनिकों में से एक बन गए। उनका जन्म 11 मई 1895 को आन्ध्र प्रदेश के एक ब्राह्मण परिवार में हुआ था। उनके पिता का नाम नारायण था और उनकी माता का नाम संजीवम्मा था। जिद्दू कृष्णामूर्ति एक महान विचारक थे। जिन्होंने इस समय भारत के दार्शनिक विचारों और सांस्कृतिक परम्परा को विकसित किया। कृष्णामूर्ति के जीवन दर्शन का महत्वपूर्ण गुण यह है कि सामाजिक, राजनैतिक, आध्यात्मिक और आर्थिक विचार धारा से प्रभावित नही है। जे0कृष्णामूर्ति जी के जीवन के बारे में दार्शनिक दृष्टिकोंण मनुष्य को अपनी ऊर्जा को नियंत्रित करने, आश्चर्यचकित करने, अस्वीकार करने और भागने की कोशिश करने में बर्बाद नही करना चाहिए बल्कि उस सारी ऊर्जा का उपयोग सुलभ परिस्थितियों में जीने में करना चाहिए। जिद्दू कृष्णामूर्ति न केवल पारम्परिक भारतीय शिक्षा में विश्वास करते थे, बल्कि वर्तमान तकनीकी शिक्षा में भी विश्वास करते थे। जिद्दू कृष्णामूर्ति के दृष्टिकोण के अनुसारः–

''वर्तमान शिक्षा पूरी तरह से विफल है क्योंकि इसमें तकनीकी शिक्षा पर अत्यधिक जोर दिया गया है। उन्होंने शिक्षा के सभी आयामों पर भी अधिक जोर दिया, जिसमें शारीरिक, मानसिक, आध्यात्मिक, सामाजिक, मनोवैज्ञानिक विकास शामिल हैं। जिसका अर्थ है–जीवन जीने की समझ।''

अध्ययन के उद्देश्य

01. जे0कृष्णामूर्ति के विचारों का शिक्षा दर्शन में अध्ययन करना।
02. जे0कृष्णामूर्ति के शैक्षिक विचारों का वर्तमान शिक्षा में प्रासंगिकता का पता लगाना।

अध्ययन की पद्धति

प्रस्तुत शोध पत्र पूर्णतः दार्शनिक पद्धति पर आधारित है तथा इसमें प्राथमिक स्त्रोतों तथा सभी द्वितीयक स्त्रोतों से आँकड़े एकत्रित किए गए हैं।

जे0कृष्णामूर्ति का जीवन

जे0कृष्णामूर्ति जी का जन्म 11 मई 1895 को आन्ध्र प्रदेश के एक ब्राह्मण परिवार में हुआ था। जब कृष्णामूर्ति जी 10 वर्ष के थे तब उनकी माँ का देहान्त हो गया था। उनकी मृत्यु के बाद मार्गदर्शन और सहायता के लिए जे0कृष्णामूर्ति जी अपने भाई पर निर्भर रहे। 14 वर्ष

के होने के पश्चात् थियोसोफिकल सोसाइटी के एक नेता चालर्स लीडबीटर ने जे0कृष्णामूर्ति जी की पहचान की थी। चालर्स लीडबीटर थियोसोफिकल सोसाइटी के एक आध्यात्मिक नेता थे। श्रीमती ऐनी बेसेंट थियोसोफिकल सोसाइटी की अध्यक्ष थी। उन्होंनें कृष्णामूर्ति और उनके भाई नित्यानन्द को चैन्नई में आमंत्रित किया था। ऐनी बेसेंट कृष्णामूर्ति जी की अभिभावक और कुछ मायनों में उनके लिए माँ जैसी बन गई। सन् 1911 में जे0कृष्णामूर्ति 15 वर्ष की आयु में श्रीमती ऐनी बेसेंट के साथ इंग्लैड गए। इंग्लैंड में वे 10 वर्ष तक रहे और शिक्षा प्राप्त की। उन्होंनें लंदन विश्वविद्यालय में मैट्रिककुलेशन परीक्षा उत्तीर्ण करने के लिए तीन बार असफल प्रयास किए। उन्होंनें लंदन में सन् 1911 में अपना पहला भाषण दिया। जे0कृष्णामूर्ति जी का पूरा जीवन अपने भाई नित्यानन्द की मृत्यु के साथ बदल गया और कृष्णामूर्ति जी पृथ्वी पर सभी अस्तित्व के आधार के बारे में सोचने लगे। कृष्णामूर्ति जी को एक असामान्य आध्यात्मिक अनुभव हुआ। जिससे कृष्णामूर्ति जी एक विश्व आध्यात्मिक नेता के रूप में सामने आए। ऐनी बेसेंट ने जे0कृष्णामूर्ति जी को सातवाँ शिष्य नियुक्त किया और घोषण की जिस समय कृष्णामूर्ति जी युवा आध्यात्मिक गुरू थे। उनका स्वागत एक महान नेता के रूप में किया गया। लम्बे समय के बाद कृष्णामूर्ति जी को थियोसोफिकल सोसाइटी से निकाल दिया गया। तो उन्होंने दानकर्ताओं को सारा धन और सम्पत्ति वापस कर दी। उन्होनें स्वयं कहा–

"मै मनुष्य को जंजीरों और भय से मुक्त करना चाहता हूँ। मै कोई नया धर्म नही खोज रहा हूँ। मेरा एक मात्र उद्देश्य मनुष्य को पूरी तरह से मुक्त करना है। "

भारतीय शिक्षा पर कृष्णामूर्ति के विचार

जिद्दू कृष्णामूर्ति एक अद्वितीय व्यक्तित्व वाले व्यक्ति थे जिन्होंने मानव मस्तिष्क को एक अभिनय तरीके में पुनः विकसित किया। शिक्षा के क्षेत्र में जे0कृष्णामूर्ति जी का योगदान बहुत व्यापक और गहरा है और जिसने भारतीय शिक्षा सिद्धान्तों में महत्वपूर्ण बदलाव लाया है।

जिद्दू कृष्णामूर्ति के अनुसार शिक्षा का अर्थ

- शिक्षा सीखने का सार है जो बौद्विक गतिविधि का सार है।
- शिक्षा व्यक्ति को सभी सामाजिक बाधाओं से मुक्त करने में मदद करती है।
- शिक्षा को बच्चों को अभिव्यक्त करने और अपनी क्षमताओं को विकसित करने का पूरा अवसर प्रदान करना चाहिए।
- शिक्षा का अर्थ बच्चों के मन में विद्यमान मूल्यों का संचरण करने तथा उसे आलोचनातमक एवं तर्क संगत ढंग से सोचना सीखना नही है।
- शिक्षा सही मायने में व्यक्ति को परिपक्व होने और प्रेम व भलाई में भरपूर फलने–फूलने में मदद करती है।
- शिक्षा को हमारी सामाजिक और तर्कसंगत बाधाओं पर जोर देने के बजाए, उन्हें तोडने में मदद करनी चाहिए। क्योंकि वे मनुष्य से मनुष्यों के बीच दुश्मनी पैदा करती है।
- शिक्षा की प्रक्रिया मे पूर्ण स्वतन्त्रता होनी चाहिए ताकि मष्तिष्क का उपयोग उनकी उच्चतम क्षमता तक हो सके।
- शिक्षा हमें यान्त्रिक और बुद्विमान नही बल्कि विवकेशील बनाने में मदद करती है।

01. जिद्दू कृष्णामूर्ति जी की शिक्षा के उद्देश्य एवं कार्य

जे0कृष्णामूर्ति जी का चिंतन शाश्वत जीवन को समझनें में मानवता की सहायता देश, काल, परिस्थिति एवं सांस्कृतिक भेदों की सीमा से अलग होकर सहायता करना है। शिक्षा का उद्देश्य न केवल अधिक विद्वान, तकनीशियन और नौकरी के अवसर प्रदान करना है। बल्कि एक ऐसे पुरूष और महिला को भी एकीकृत कर ना है जो भय से मुक्त हो और सभी सामाजिक बंधनों से मुक्त हो। शिक्षा का प्रारम्भ और अंत जीवन को समझना है। शिक्षा का उद्देश्य एक संतुलित मानव का विकास करना है। बहुत सारी किताबें पढ़ना या परीक्षाएं पास करके नौकरी पाना शिक्षा का उद्देश्य नही है। बल्कि शिक्षा का अर्थ है– जो जीवन भर चलने वाली प्रक्रिया और स्वयं को समझने में मदद करती हो। जे0कृष्णामूर्ति शिक्षा को न केवल आंतरिक नवीनीकरण बल्कि सामाजिक परिवर्तन का भी माध्यम बताते है। उनके अनुसार शिक्षा बच्चे को दुनिया का सामना बिल्कुल अलग बुद्विमान तरीके से करने में मदद करें, आजीविका कमाना सीखाएं। सभी जिम्मेदारी एवं संघर्षमय जीवन को जानना सीखाएं। शिक्षा बच्चों को बिना किसी भय के अपनी क्षमता के अनुसार बढ़ने और विकसित करने में मदद करें, जीवन को समग्र रूप से समझ सके और युवा पीढ़ी आपके जीवन को स्वतंत्र एवं नए प्रकार से तैयार करे। जो सदभावना से परिपूर्ण हो

International Journal of Humanities Social Science and Management (IJHSSM)
Volume 5, Issue 1, Jan.-Feb., 2025, pp: 747-751 ISSN: 3048-6874
www.ijhssm.org

और पूर्वाग्रह हो एवं पूर्वधारणाओं से मुक्त होकर वैज्ञानिक बुद्वि तथा आध्यात्मिकता से समन्व्य स्थापित कर मानव मात्र के जीवन को सुखी बना सकता हो, नए मूल्यों का निर्माण, एक नूतन संस्कृति तथा नूतन विश्व का निर्माण कर सकता हो।

02.जिद्दू कृष्णामूर्ति एवं शिक्षण विधि

जे0कृष्णामूर्ति ने इस बात को झूठलाया कि सही प्रकार के शिक्षा के अभाव में भ्रम वास्तविकता का स्थान ले लेते हैं। शिक्षण में उचित प्रकार की शिक्षण पद्धति उपलब्ध होनी चाहिए।

- मानव को उचित प्रकार की शिक्षा की भूमिका हर चीज के प्रति अत्यधिक संवेदनशील बनाना है।
- शिक्षण केवल इंजीनियर, डॉक्टर या वैज्ञानिक ही नही बनाती, बल्कि एक जीवंत, तरोताजा और उत्सुक इंसान भी बनाती है।
- शिक्षण विधि से बच्चे को यह नही सीखाया जाना चाहिए कि ''क्या सोचना है।'' बल्कि यह सीखाया जाना चाहिए कि ''कैसे सोचना है।''
- अनुदेशन प्रक्रिया का अनिवार्य हिस्सा प्रश्न पूछना और आलोचनात्मक चिंतन है।
- शिक्षण विधि बच्चे को स्वतंत्रता प्रदान करती है जिससे वह स्वयं सोचने में सक्षम हो जाता है।
- शिक्षण में प्रयुक्त विधि ऐसी होनी चाहिए कि बच्चा विषय का गहन अध्ययन कर सके।
- शिक्षक को छात्रों को सीखने के लिए प्रेरित करने का प्रयास करना चाहिए।
- शिक्षक और छात्रों की शिक्षण और सीखने की प्रक्रिया में समान भागीदारी होनी चाहिए।

03.पाठ्यक्रम

जे0कृष्णामूर्ति जी ने 08 से ज्यादा स्कूलों की स्थापना दुनिया के अलग–अलग हिस्सों में की है। उन्होंनें भारत, इंग्लैंड, हालैण्ड, आस्ट्रेलिया और उत्तरी और दक्षिणी अमेरिका में धर्म और शिक्षा से जुड़े कई पहलुओं का व्याख्यान किया। स्कूलों और शिक्षा में गहरी दिलचस्पी उनके विचारों में झलकती है। उन्होंनें कहा है कि शिक्षकों को सर्टिफिकेट और डिग्री को ज्यादा महत्व नही देना चाहिए। लेकिन कृष्णामूर्ति जी हमेशा कहते थे कि छात्रों में इससे आंतरिक प्रेरणा मिलती है।

04.शिक्षकों की भूमिका

शिक्षकों को स्वयं को समझना चाहिए और विचारों के पारम्परिक स्वरूप को मुक्त होना चाहिए। शिक्षक को प्रत्येक व्यक्ति को उसके आंतरिक मनोवैज्ञानिक संसाधनों या क्षमता, कौशल की खोज करने और छात्रों की आवश्यकताओं को समझने में मदद करनी चाहिए। शिक्षक को उचित शिक्षा के लिए अच्छा वातावरण बनाना चाहिए। शिक्षक समानता के सम्बन्ध में भी शिक्षण भी प्रदान करते हैं। शिक्षक को हमेशा अपने विद्यार्थीयों की सृजनात्मक एवं रचनात्मक बुद्वि को प्रोत्साहित करना चाहिए। जे0कृष्णामूर्ति जी के अनुसार चूकिः शिक्षण को व्यवसाय या आजीविका कमाने का साधन माना जाता है। इसलिए शिक्षक स्वयं को शिक्षण में समर्पित नही कर सकता। शिक्षक को अपने विश्वास, तौर–तरीको और विचारधाराओं को छात्रों पर नही थोपना चाहिए।कृष्णामूर्ति जी के अनुसार एक शिक्षक केवल जानकारी देने वाला नही होता, वह केवल सत्य और ज्ञान का मार्ग दिखाता है। सत्य शिक्षक से कहीं अधिक महत्वपूर्ण है नए समाज का निर्माण करने के लिए हम में से प्रत्येक को एक सच्चा शिक्षक बनना होगा, जिसका अर्थ है हमें स्वयं को शिक्षित करना होगा, हमें गुरू और शिष्य दोनों बनना होगा।

05.स्कूल

कृष्णामूर्ति फाउण्डेशन इंडिया के स्कूलों का उद्देश्य न केवल अकादमिक रूप से उत्कृष्ट होना है। बल्कि सम्पूर्ण मानव जाति के विकास से भी जुड़ा होना है। उनका मानना था कि बच्चे के व्यक्तित्व का एकीकृत विकास स्कूल के माहौल में ही सम्भव है यह तभी संभव है। जब कक्षा में छात्रों की संख्या सीमित हो। उसका मानना था कि छोटे स्कूल में बच्चों के विकास पर अधिक ध्यान दिया जाता है। जे0कृष्णामूर्ति के अनुसार–

''सैकड़ों बच्चों वाला एक बड़ा स्कूल, एक बड़ा उद्योग, बड़े सरकारी कार्यालय या बड़े बैंक की तरह होता है जिसका उद्देश्य यान्त्रिक तरीके से कुछ नियमित कार्यों को पूरा करना होता है।''

उन्होंनें कहा कि वास्तविक शिक्षा केवल एक छोटे स्कूल के माध्यम से दी जा सकती है, जहां शिक्षक प्रत्येक छात्र पर अधिक ध्यान दे सकता है।

International Journal of Humanities Social Science and Management (IJHSSM)
Volume 5, Issue 1, Jan.-Feb., 2025, pp: 747-751 ISSN: 3048-6874
www.ijhssm.org

06.अनुशासन

स्कूलों में अनुशासन जरूरी हो जाता है। लेकिन जे0कृष्णामूर्ति का मानना है कि अनुशासन से आजादी कभी नही आती। उनके अनुसार छोटे स्कूल सिस्टम में आज्ञाकारिता विकसित की जा सकती है। जहां शिक्षक और छात्र एक दूसरे के साथ घनिष्ठ रूप से जुड़े होते हैं। उनका मानना है कि अगर शिक्षक खुद निडर हो तो इसका नतीजा यह होता है कि बच्चे भी निडर व्यवहार करते हैं।

07.विद्यार्थी

जे0कृष्णामूर्ति का मानना था कि हर व्यक्ति में एक अलग विशेषता होती है। शिक्षक को विद्यार्थियों की अनूठी विशेषता को समझना चाहिए और फिर उचित तरीके से शिक्षण प्रदान करना चाहिए। हर बच्चे में अलग–अलग क्षमताएं होती हैं, इसलिए शिक्षक को छात्र का निरीक्षण करना चाहिए और फिर अपने निष्कर्ष पर पहुँचना चाहिए।

08.मूल्यांकन पद्धति

जे0कृष्णामूर्ति मूल्यांकन की प्रचलित परम्परा को स्वीकार नही करते हैं। क्योंकि मूल्यांकन की यह प्रणाली विद्यार्थियों में प्रतिस्पर्धा, तुलना और महत्वाकांक्षा उत्पन्न करती है। प्रथम आने की दौड़ या विफल होने वाले विद्यार्थी, हताशा, कुंठा और भय से ग्रसित हो जाते है। जिससे छात्रों के समग्र व्यक्तित्व का विकास नही हो पाता है। जे0कृष्णामूर्ति ने विद्यार्थियों में तुलना, प्रतियोगिता, परीक्षा भय और प्राप्तांक परीक्षा प्रणाली को समाप्त करने पर बल दिया। अतः सम्यक शिक्षा में परीक्षा प्रणाली और मूल्यांकन प्रणाली के स्थान पर नवीन व्यवस्था की आवश्यकता है। जहां विद्यार्थी का सीखना, प्रज्ञावान होना और सृजनशील होना आदि महत्वपूर्ण है। न की अधिकाधिक प्राप्तांक लाना। जे0कृष्णामूर्ति विद्यार्थियों को सम्बोधित करते हुए कहते हैं कि–''जब शिक्षक कक्षा में किसी दूसरे छात्र से आपकी तुलना करता है। आपको किसी छात्र से भिन्न, कम या अधिक अंक देता है, भिन्न श्रेणी प्रदान करता है तो शिक्षक को ध्यानपूर्वक शिक्षण का निरीक्षण करना है इस प्रकार से आपको नष्ट किया जाता है। आपकी प्रतिमाएं, आपकी चेतना भीतर तक कुंठित हो जाती है।''

जिद्दू कृष्णामूर्ति के शिक्षा दर्शन की प्रासंगिकता

जे0कृष्णामूर्ति जी ने कहा कि मनुष्य को सामाजिक बाधाओं से पूरी तरह मुक्त करना, उनकी एक मात्र चिंता है अर्थात् 'स्वतंत्रता' उनके जीवन के दृष्टिकोण का केन्द्रबिन्दु थी। शिक्षा के लिए कृष्णामूर्ति जी का मानवता का दृष्टिकोण पारम्परिक शिक्षा में बनी दृष्टिकोण के विपरीत है।शिक्षा का कार्य आपको बचपन से ही किसी की नकल करने के लिए नही, बल्कि हर समय खुद बने रहने में मदद करता है। इसलिए स्वतंत्रता इस बात को समझने में निहित है कि आप हर पल क्या हैं। यह सच है कि शिक्षा हमेशा हमें प्रोत्साहित करती है। जीवन को समझना खुद को समझना है, और यह शिक्षा की शुरूआत या अंत है। आधुनिक शिक्षा प्रणाली हमें विचारहीन ईकाई बना रही है। यह हमें अपना व्यक्तिगत व्यवसाय खोजने में बहुत कम मदद करती है। कृष्णामूर्ति जी की सही शिक्षा का विचार आपको यह पता लगाने में मदद करना है कि आप वास्तव में क्या हैं, मै कौन हूँ? पूरे दिल से, क्या करना पसंद करता हूँ। यह एक ऐसी चीज की तरह है जिसमें आपको अपना दिमाग, आपका दिल लगा दिया है। इस सन्दर्भ में कृष्णामूर्ति जी का शिक्षा दर्शन बहुत महत्वपूर्ण है। और उन्होंनें शिक्षा और समाज के बीच सम्बन्धों पर जोर दिया है। कृष्णामूर्ति जी की शिक्षाओं का यह पहलू उनके शैक्षिक चिंतन का आधार है और यह शैक्षिक नीति निर्माण में महत्वपूर्ण योगदान दे सकता है, जिसका सम्बन्ध में सही शिक्षा के माध्यम से परिवर्तन से है।

निष्कर्ष

इस लेख में चर्चा का मुख्य विषय कृष्णामूर्ति जी के विचारों और शैक्षिक दर्शन से सम्बन्धित है। जे0कृष्णामूर्ति विद्यार्थी केन्द्रित शिक्षा स्थापित करना चाहते थे। उनका मानना था कि शिक्षा अच्छे जीवन के लिए आजीवन चलने वाली प्रक्रिया है। जे0कृष्णामूर्ति स्वतंत्र, प्राकृतिक शिक्षा की तकनीक चाहते थे और यह शिक्षा केन्द्र में बंधी हुई नही है। सही तरह की शिक्षा पूछताछ करना है और सीखना बच्चों का कार्य है। शिक्षण का अर्थ केवल जानकारी देना नही है। बल्कि जिज्ञासु मन का विकास करना है। वर्तमान में उनके अनुसार शिक्षा विरोधीभाषी मन को विकसित करने में योगदान देती है। और शिक्षा का अर्थ एकीकृत मन को विकसित करने में सहायता करना है।

International Journal of Humanities Social Science and Management (IJHSSM)
Volume 5, Issue 1, Jan.-Feb., 2025, pp: 747-751 ISSN: 3048-6874
www.ijhssm.org

संदर्भ

01. बायर्स,पी.(1998) विश्व जीवनी विश्वकोश। मिशिगनः

गेल रिसर्च।

02. अभ्यंकर,एस.एन.(1982)।जिद्दू कृष्णामूर्ति के शिक्षा दर्शन का एक अध्ययन

डॉक्टरल थीसिस,www.shodhganga.inflibnet,ac.in से प्राप्त।

03. चिन्नैया,पी.(1994) ।जिद्दू कृष्णामूर्ति हयूमन प्रिकैमेंट एंड द वे आउट ए क्रिटिकल स्टडी पर।

डॉक्टरल थीसिस, तिरूपति; त्रिपुटी विश्वविद्यालय।

04. जे0कृष्णामूर्ति, मध्य(1974), शिक्षा एवं जीवन का महत्व, कृष्णामूर्ति फाउंडेशन भारत।

https://शिक्षा–जीवन का महत्व,जिद्दू कृष्णामूर्ति/dp/0060648767

05. एस,सैमुअल रवि (2016)। शिक्षा का एक व्यापक अध्ययन। पीएच,आई
लेसनिंग प्राईवेट लिमिटेड, दिल्ली।

06. वूलफोक, अनीता (2017) एजुकेशनल साईकोलॉजी (13वां संस्करण)।दिल्लीः पियर्सन इंडिया एजुकेशन।
सर्विसेज प्राईवेट लिमिटेड।

07. क्रेसवेल, जे,डब्ल्यू, (2015)शैक्षिक अनुसंधानःगुणात्मक और मात्रात्मक अनुसंधान की योजना बनाना, संचालन करना और मूल्यांकन करना(चौथा संस्करण)।न्यूयॉर्कःपियर्सन पब्लिकेशन।

08. मल्होत्रा,मीता (2018)।वर्तमान शिक्षा प्रणाली में जिद्दू कृष्णामूर्ति के शैक्षिक योगदान की प्रासंगिकता।इंटरनेशनल जर्नल ऑफ साइंटिफिक रिसर्च एण्ड मैनेजमेंट।(आईजेएसआरएम)एक्सेस ऑन–फाइलः///C:/Users/Pranab/Downloads/1249-Article%20text-2155-1-10-20180119%20(1).pdf

09.